Subject - Psychology
Class - UG, Sem-1
Unit - 04, Personality.
Topic - Determinants of Personality.
Date -
Name - Dr. Shyam Sundar Sharma.

Ques. व्यक्तित्व के निर्धारकों का वर्णन करें।

Ans. :- व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के Personality का हिन्दी रूपांतरण है। Personality लैटिन के Persona से लिया गया है जिसका अर्थ होता है, मुखौटा। प्राचीन काल में ग्रीक नाटककार मुखौटा लगाकर रंग-मंच पर अपनी भूमिका निभाते थे।

ऑलपोर्ट के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनो-शारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण से अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।"

व्यक्तित्व के निर्धारक या व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक :-

व्यक्तित्व के निर्धारक से तात्पर्य कुछ ऐसे कारकों से होता है जिनसे व्यक्तित्व का विकास प्रभावित होता है।

(1) जैविक कारक / वंशानुक्रम कारक :-

जैविक कारक जो अनुवांशिक होते हैं तथा जो जन्म या जन्म के पहले ही व्यक्ति में मौजूद होते हैं। ऐसे कारक निम्न हैं -

(i) अन्तःस्रावी ग्रंथियां :-

प्रायः यह देखा जाता है कि कभी-कभी हम बहुत सक्रिय तथा कभी-कभी निष्क्रिय हो जाते हैं या कभी उदास। इसका कारण यह है कि शरीर में कुछ ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं, जिनका नियंत्रण कुछ ग्रंथियों द्वारा होता है। जैसे - पीयूष ग्रंथि, अग्निाशय ग्रंथि, गल ग्रंथि, यौन ग्रंथि।

P.T.O.

(2) शरीर रचना – दैनिक व्यवहार में हम देखते हैं कि व्यक्ति की शारीरिक रचना से उसके स्वभाव का कुछ न कुछ सम्बंध अवश्य होता है। प्रायः मोटे व्यक्ति हँसी-मजाक, आराम पसंद और सामाजिक होते हैं। जबकि दुबले-पतले व्यक्ति संयमी, तेज और चिड़चिड़े होते हैं।

(3) शारीरिक रचना:-

अन्तःस्त्रावी ग्रंथियों और शारीरिक रचना के अतिरिक्त व्यक्तित्व के जैविकीय कारकों में शारीरिक रचना का भी महत्व है।

(2.) मनोवैज्ञानिक कारक:-

इन कारकों में रुचियाँ, अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा, बौद्धिक क्षमताएँ आदि हैं। इसके अतिरिक्त आत्माभिव्यक्ति, आत्मस्वीकृति, आत्मबोध आदि। वातावरण में समायोजन के लिए आत्मस्वीकृति का मिलना आवश्यक है। इसमें बुद्धि और मानसिक विकास, रुचियाँ और दृष्टिकोण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, संवेगात्मक विशेषताएँ आदि महत्वपूर्ण हैं।

(3) वातावरण सम्बंधी कारक:- (i) सामाजिक कारक:-

व्यक्ति समाज में रहता है, वहाँ सामाजिक सम्बंधों का विकास करता है। व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक परिस्थितियाँ, सामाजिक समूहों, सामाजिक संस्थानों, परिवार, पास-पड़ोस इत्यादि का प्रभाव पड़ता है।

(ii) विद्यालय का प्रभाव –

बच्चों के व्यक्तित्व पर शिक्षक एवं साथियों का प्रभाव पड़ता है। बड़ी आयु या ऊँची कक्षा का विद्यार्थी छोटी आयु के छात्रों के साथ अधिकारपूर्वक व्यवहार करता है। उसमें स्नेह, निर्दयी भी होता है जिसका प्रभाव उस पर पड़ता है।

(iii) सांस्कृतिक कारक:- संस्कृति रहने में और सोचने में, दैनिक क्रियाओं में, कक्षा में, साहित्य में, धर्म में, मनोरंजन में इत्यादि की अभिव्यक्ति है।

भारतीय लोगों में आज भी धार्मिक मूल्य महत्वपूर्ण है।

P.T.O

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानवशास्त्रियों के अनुसंधान से व्यक्तित्व पर संस्कृति का प्रभाव काफी महत्वपूर्ण है।